



शिव शंकर यादव

**विकास खण्ड बरहनी जनपद चंदौली के ग्रामीण विकास : एक भौगोलिक अध्ययन**

भूगोल विभाग, सकलडीहा पी0जी0 कालेज, सकलडीहा-चंदौली (उ0प्र0), भारत

Received-29.11.2023,

Revised-05.12.2023,

Accepted-10.12.2023

E-mail: aaryavart2013@gmail.com

**सारांश:** किसी भी क्षेत्र के सम्यक् अध्ययन के लिए उस क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होना आवश्यक है। भौगोलिक पृष्ठभूमि में उस क्षेत्र का संसाधन आधार छिपा रहता है और जब तक उस क्षेत्र में संसाधनों की उपलब्धता, उपयोग एवं उनके दुरुपयोग तथा समस्याओं की जानकारी नहीं होगी, तब तक उस क्षेत्र की सही-सही विकास आयोजना प्रस्तुत नहीं की जा सकती। भौगोलिक पृष्ठ भूमि के अन्तर्गत क्षेत्र की स्थिति एवं विस्तार, धरातलीय स्वरूप एवं उच्चावच, भू-आकृतिक प्रदेश, उपवाह प्रतिरूप, मृदा वायुदाब, पवन, वर्षा की मात्रा, तापमान एवं प्राकृतिक वनस्पतियों इत्यादि भौतिक तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। इससे हमें उस क्षेत्र की जलवायुविक दशाओं का ज्ञान होता है। इस आधार पर हम सहज ही उस क्षेत्र के मानव क्रियाकलापों को समझ सकते हैं और मानव क्रियाकलापों तथा उनके रहन-सहन एवं जीवन-स्तर को उपरोक्त तत्वों के आधार पर सरलता से समझा जा सकता है। भौतिक दशाओं का मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इन क्रियाकलापों के लिए भौतिक दशाएँ प्रमुख रूप से उत्तरदायी हैं।

**कुंजीशब्द शब्द- भू-आकृतिक, अक्षांश, वायुदाब, नाचिरागी, बांगर, कैल्सियम कार्बोनेट, निक्षेप, धनखण्ड, अपवाहतंत्र, सरोवाज।**

बरहनी विकासखण्ड चंदौली जनपद (उ0प्र0) में है। यह वाराणसी नगर से सुदूर पूर्व में लगभग 43किमी0 दूरस्थ है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25023' उ0 अक्षांश तथा 25033'11" उ0 अक्षांश से 25023' उ0 अक्षांश एवं देशान्तर्रीय विस्तार 83011'40" पूर्वी से 83033'35" पूर्वी है तदनुसार यहां का कुल क्षेत्रफल 271.70 वर्ग किमी0 एवं जनसंख्या 18652 (वर्ष-2011) हैं। यह विकासखण्ड उत्तर में धानापुर, एवं दक्षिण पूर्व में बिहार राज्य तथा उत्तर पूर्व में गाजीपुर जनपद से आवृत्ति है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से यह 12 न्याय पंचायतों 65 ग्राम सभाओं एवं 199 ग्रामों (जिसमें 56 नाचिरागी ग्राम भी सम्मिलित हैं) में विभक्त है। विकास खण्ड मुख्यालय सैयदराजा में स्थित है।

मध्य गंगा घाटी में स्थित बरहनी विकास खण्ड मुख्यतः गंगा एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लायी गयी जलोढ़ मिट्टी से बना हुआ है, जिसमें चीका एवं रेत की प्रधानता पायी जाती है। इस क्षेत्र में कुंओं की खुदाई से पता चलता है कि संरचना की दृष्टि से यह क्षेत्र दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

प्राचीन जलोढ़ का जमाव विकासखण्ड के बाढ़ से अप्रभावित भागों (बांगर) में पाया जाता है। इसका रंग भूरा होता है, क्योंकि इसमें कैल्शियम कार्बोनेट के कंकड़ों की अधिकता होती है। क्षेत्र के अधिकांश भागों में फैली इस मिट्टी से मुक्त क्षेत्रों में अनेकों छोटे-छोटे तालाब मिलते हैं जो बरसातके दिनों में भर जाते हैं। यत्र-तत्र रेह का निक्षेप भी मिलता है। जो प्रायः वर्षा काल में दृश्य होता है। प्राचीन जलोढ़ धान की कृषि के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होने के कारण इसे 'धनखण्ड' क्षेत्र भी कहते हैं।

पश्चिम भाग की समुन्द्रतल से ऊँचाई 77.3 मी0 क्षेत्र के अपवाह तंत्र को प्रभावित करती है। यह नदी मिर्जापुर जिले के कैमूर पहाड़ियों में सरोदाज नाम पहाड़ी से निकलती है, तथा विकास खण्ड के दक्षिणी में नौबतपुर ग्राम में प्रवेश करती है। अध्ययन क्षेत्र की दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी सीमा रेखा का निर्माण करते हुए यह बिहार में चली जाती है। कर्मनाशा ग्रीष्मकाल में प्रायः सूख जाती है जब कि बरसात में यह बाढ़ का कारण बनती है। इससे छोट-छोटे नाले भी निकलते हैं। क्षेत्र के उत्तरपूर्व लमुही नाला हैं। उक्त प्रवाह-प्रणाली की अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में छोटे-छोटे तालाब एवं ताल मिलते हैं। जिनमें अधिकांश बरसात के मौसम में जलप्लवित हो जाते हैं, किन्तु ग्रीष्मकाल में सूख जाते हैं।

प्राकृतिक कारकों में जलवायु का विशेष पूर्वी स्थान है। यह मानव जीवन को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों में प्रभावित करती है। जलवायु विशिष्टताएँ भूमि उपयोग प्रकार उसकी गहनता, फसलों के उत्पादन एवं वितरण इत्यादि को प्रभावित करते व विशेष की जनसंख्या वहन क्षमता को बहुत अंशो तक निर्धारित करती है। अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। अतः यहां कि जलवायुविक विशिष्टताओं का विश्लेषण करना अति आवश्यक है। मध्य गंगा के मैदान में स्थित इस क्षेत्र की जलवायु महाद्वीपीय उपोष्ण मानसूनी प्रकार की है। यहां दक्षिण-पश्चिम एवं उत्तरी पूर्वी मानसूनी हवाओं के चलने के कारण मौसमी परिवर्तन होता रहता है। यहां समान्यतः तीन प्रकार की ऋतुएं मिलती हैं। (1) शीत ऋतु (2) ग्रीष्म ऋतु (3) वर्षा ऋतु।

शीत ऋतु का आगमन दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के वापसी के साथ मध्य अक्टूबर में होता है। यह ऋतु मेघ रहित शान्त एवं स्वच्छ नीला आकाश मुक्त होती है। 1997 में दिसम्बर एवं जनवरी का तापक्रम क्रमशः 8.19 डिग्री एवं 7.82 डिग्री से0ग्रे0 तक पहुँच गयी। वैसे तो इस ऋतु में आकाश निर्मल एवं मेघ रहित होता है, किन्तु उत्तरी पश्चिमी चक्रवात से कुछ वर्षा हो जाती है। जिसका रबी की फसल पर बहुत लाभदायक प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी इस ऋतु में पछुआ पवनों के कारण पाला एवं कुहरा पड़ता है, जो मानव स्वास्थ्य एवं फसलों के लिए हानिप्रद होता है। ऐसा प्रकोप बहुधा दिसम्बर व जनवरी महीनों में देखा जाता है।

मार्च में तापमान में वृद्धि होने के साथ ही साथ ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। तापान्तर में क्रमशः निरंतर वृद्धि होने से मई और जून का महिना अत्यधिक गर्म हो जाता है। सूर्य की तीव्र गर्मी के कारण धरातल वनस्पति-विहीन होने लगता है। वर्ष 2010 में इस ऋतु का औसत उच्चतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 35.43 से0ग्रे0 एवं 15.70 से0ग्रे0 था। ग्रीष्म ऋतु के मार्च महीने में चलने वाली पछुआ पवन को स्थानीय भाषा में 'फगुनहट' तथा मई एवं जून में प्रवाहित होने वाली गर्म शुष्क पवन को 'लू' कहा जाता है। कभी-कभी



लू के साथ-साथ आंधी चलती है और आंधी के बाद यदा-कदा वृष्टि भी हो जाती है। गंगा घाटी में इन्हें 'नार्वेस्टर' भी कहते हैं। दक्षिणी पश्चिमी मानसून जून के अंतिम सप्ताह से वर्षा ऋतु प्रारम्भ होता है। सर्वाधिक वर्षा जुलाई एवं अगस्त महीने में होती है। इस ऋतु में कुल वार्षिक वर्षा का लगभग 90 प्रतिशत वर्षा प्राप्त होता है। इस समय सापेक्षिक आर्द्रता बहत अधिक (79.24) होती है।

अध्ययन क्षेत्र का औसत तापमान 25.96 डिग्री से0ग्रे0 है, जबकि औसत मासिक तापमान जनवरी (शीतऋतु) में 15.76 डिग्री से0ग्रे0 से लेकर जून में 35.43 डिग्री से0ग्रे0 तक रहता है। मई और जून के गति से चलने वाली गर्म पछुआ हवाएं (लू) असहनीय हो जाती है। इस समय अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 42.43 डिग्री और 27.74 डिग्री से0ग्रे0 रहता है। जुलाई माह में वर्षा प्रारम्भ होने के साथ ही साथ तापक्रम में गिरावट आने लगती है। फिर भी तापमान सामान्यतः ऊँचा ही रहता है। जुलाई एवं अगस्त में क्रमशः अधिकतम तापमान 35.45 डिग्री एवं 32.6 डिग्री से0ग्रे0 एवं न्यूनतम तापमान 25.9 डिग्री एवं 24.42 डिग्री से0ग्रे0 रहता है।

तापमान एवं वायुदाब का सम्बन्ध परस्पर प्रतिकूल होता है, अर्थात् ताप अधिक दाब कम एवं दाब अधिक ताप कम। अतएव शीत ऋतु (दिसम्बर एवं जनवरी) में वायुदाब सबसे अधिक (1017.8 मिलीबार) हो जाता है। जून एवं जुलाई के महीने में वायुमण्डलीय दाब न्यूनतम (991.0 मिलीबार तक) होता है सितम्बर एवं अक्टूबर में पुनः दाब में वृद्धि होने लगता है।

वायु की दिशा मौसम के अनुसार बदलती रहती है। वर्षा ऋतु (जून के मध्य से अक्टूबर मध्य तक) में दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी हवाएं चलती हैं जब शीत ऋतु (मध्य अक्टूबर से फरवरी तक) में उत्तरी पूर्वी हवाओं की प्रधानता होती है। ग्रीष्म ऋतु (मार्च से जून तक) में प्रायः पश्चिमी भाग अत्यधिक गर्म हवाएं एवं आंधी चलती है।

ऋतुओं में परिवर्तन का प्रवाह सापेक्षिक आर्द्रता पर विशेष रूप से परिलक्षित होता है। दिसम्बर एवं फरवरी के महीनों में औसत सापेक्षिक आर्द्रता क्रमशः 75 एवं 75 प्रतिशत है, जबकि अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता 79.24 (सितम्बर) एवं न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता 31.25 (अप्रैल, ग्रीष्म ऋतु) होती है।

अध्ययन क्षेत्र में वर्षा का मुख्य स्रोत दक्षिणी पश्चिमी मानसून है जिसका आगमन यहां प्रायः जून के अन्तिम में होता है। सामान्यतया यहां वार्षिक वर्षा का 85 प्रतिशत भाग जुलाई से मध्य अक्टूबर की अवधि में प्राप्त हो जाता है। शेष 10 प्रतिशत वर्षा शीत ऋतु के दिसम्बर एवं जनवरी माह में उपलब्ध होता है जो रबी की फसल के लिए विशेष रूप से लाभप्रद सिद्ध होता है। कभी-कभी फरवरी, मार्च में वर्षा के साथ ओले भी पड़ते हैं, जो खड़ी फसल के लिए हानिकारक होता है।

भारत में मिट्टी का सर्वोपरि महत्व है, क्योंकि यहाँ सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है। कृषि कार्य काफी अंशों तक मिट्टी की संरचना एवं उसकी उर्वरता पर निर्भर है। कृषि की उत्पादकता, उपयुक्त उर्वरकों का उपयोग आदि का निर्धारण किसी प्रदेश के मिट्टी द्वारा ही होता है। ग्रामीण जनसंख्या के जीवन यापन में मृदा एक सहायक संसाधन है। जिसका वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया गया है, बलुई दोमट मिट्टी, मटियार दोमट एवं काली मिट्टी।

**1. बलुई दोमट मिट्टी-** यह मिट्टी कर्मनाशा के निकटवर्ती ग्रामों में मिलती हैं, इसमें बालू की अधिकता होती है। प्रत्येक वर्ष नवीन कार्य मिट्टी की परत जमा होती हैं। गंगा के तटवर्ती ऊँचे भू-भागों में जलोढ़ मिट्टी का अभाव है। इसमें बलुई एवं दोमट मिट्टियों की प्रमुखता होती है। इस मिट्टी का पीएच मूल्य 6-7 हैं, इस मिट्टी में बालू की मात्रा 57 प्रतिशत मिट्टी की मात्रा 26.5 प्रतिशत तथा जल धारण करने की क्षमता 44 प्रतिशत होती है।

**2. मटियार दोमट (धनखर) मिट्टी-** विकासखण्ड के जो समतल भाग है, उसमें उर्वर दोमट मिट्टी मिलती है। नहर द्वारा सिंचित इस क्षेत्र में धान तथा गेहूँ की कृषि महत्वपूर्ण है। इस मिट्टी के क्षेत्र को "धान का कटोरा" कहा जाता है। इसमें यत्र-तत्र कंकड़ों का मिश्रण मिलता है। किन्तु बालू, मृत्तिका तथा सिल्ट की प्रधानता होती है। जिनकी मात्रा क्रमशः 37.78 प्रतिशत एवं 30.30 प्रतिशत रहती है। इस मिट्टी में जल धारण करने की क्षमता 4.7 प्रतिशत तथा पीएच मूल्य 6.5 से 7.5 होता है। इस प्रकार यह मिट्टी सूखने पर कठोर एवं नम पर मुलायक होती है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ अधिक अन्न की भाग एवं नवीन कृषि यन्त्र उन्नतशील बीजों तथा रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के फलस्वरूप गेहूँ के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हो रही है।

**3. करइल या काली मिट्टी-** यह मिट्टी अध्ययन क्षेत्र के कुल भागों में विस्तृत है। इसका रंग गहरा काला एवं कणों का पारस्परिक ग्रंथन अत्यधिक सूक्ष्म होता है। इस मिट्टी में पीएच 7.5 से 8.5 तथा जल धारण करने की क्षमता अन्य मिट्टियों की अपेक्षा अधिक (50.23 प्रतिशत) होती है।

किसी क्षेत्र की वनस्पति उसकी जलवायु (तापक्रम, वर्षा) तथा मिट्टी से प्रभावित होता है। वनस्पति का प्रभाव मानव जीवन पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में पड़ता है। एक ओर जहां ये ईंधन, ईमारती लकड़ी, कागज, कृषि उपकरण तथा फर्नीचर निर्माण हेतु उपयुक्त होती है वहीं दूसरी ओर गोंद, रेजिन, जंगली प्राकृतिक रबर भी वनों से प्राप्त होते हैं। श्री सुब्राह्मण्यम के शब्दों में किसी भी भू-भाग की वनस्पति उस स्थान के जलवायु के विविध तत्वों से प्रभावित होती है। विकासखण्ड बरहनी में मानसूनी पतझड़ प्रकार की वनस्पतियां पायी जाती है। निरन्तर वन कटाव से अध्ययन क्षेत्र वीरान हो रहा है। वन कृषि भूमि में परिवर्तन हो रहा है। वनों के नाम पर यत्र तत्र मानव द्वारा लगाये गये बगीचें दिखायी देते हैं। वृक्षों में मुख्यतया आम, जामुन, अमरूद, नीम, पीपल, आवंला, शीशम, सागौन इत्यादि पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त सदाबहादर वनस्पतियों में बांस एवं शुष्क वनस्पतियों में बबूल इत्यादि पाये जाते हैं। सामाजिक वानिकी विभाग द्वारा विकासखण्ड में 17.8 एकड़ भूमि पर वृक्षारोपण का कार्य किया जा रहा है। वन विभाग द्वारा आरोपित वृक्षों में युकोलिप्टस, शीशम, आम, महुआ, जामुन, नीम, बबूल, जरेता, गोल्ड मोहर, सागौन, शीरस इत्यादि वृक्षों की आवश्यकता है।

ग्रामीण विकास की दिशा सुनिश्चित करने में भारतीय भूगोलवेत्ताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है और देश के विभिन्न भागों में जनपद स्तर, तहसील स्तर एवं विकासखण्ड स्तर पर समन्वित ग्रामीण विकास आयोजना हेतु अध्ययन प्रस्तुत किये हैं। सन् 2000



में रूपाली जुवाल ने पौड़ी गढ़वाल में एक विकास खण्ड हेतु "इको डेवलपमेन्ट एप्रोच टू इन्टीग्रेटेड एरिया प्लानिंग" नामक शोध अध्ययन प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त वी०के० सुन्दरम (1980), रामबाबू सिंह (1981), एस०बी० मिश्रा (1981), आर० पी० सिंह (1983), मंगला सिंह (1981), एस०बी० सिंह (1987), रामचन्द्र तिवारी, राधेश्याम मिश्र (1995), नामदेव, रमेश चन्द्र (1996), संतोष सिंह (2001), संजय कुमार सिंह (2001), दिनेश सिंह (2002) के कार्य भी महत्वपूर्ण हैं।

भौगोलिक सन्दर्भ में गाँवों के विकास की संकल्पना ग्रामीण विकास, समन्वित ग्रामीण विकास एवं क्षेत्रीय विकास की संकल्पना से जुड़ी है। ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्रों के बहुआयामी विकास के लिए किए गए अनुकूल क्रियाकलापों से हैं, जबकि समन्वित क्षेत्रीय विकास स्थानीय संसाधनों के उपयोग के नियोजन से सम्बद्ध है।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, के०पी० (2009), आजमगढ़ जनपद का भूगोल, अग्रवाल बुक डिपो, आजमगढ़।
2. कोहन, सी०एफ०, (1954): चौप्टर फाइव इन अमेरिकन ज्योग्राफी: इन्वेन्ट्री एण्ड प्रोस्पेक्ट्स, ए०डी०पी०ई० जेम्स एण्ड सी०एफ० जोहन्स एसोसिएशन आफ अमेरिकन ज्योग्राफी, हाराक्यूरेज यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. सी०एफ०, (1954): चौप्टर फाइव इन अमेरिकन ज्योग्राफी: इन्वेन्ट्री एण्ड प्रोस्पेक्ट्स, ए०डी०पी०ई० जेम्स एण्ड सी०एफ० जोहन्स एसोसिएशन आफ अमेरिकन ज्योग्राफी, हाराक्यूरेज यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. क्रो, एल०एफ०, एण्ड क्रो ए० (1955): इन इन्ट्रोडक्शन टू एजुकेशन पिन्टेड, इन यू०एस०ए० टोरेन्टो इत्यादि।
5. चान्दना, आर०सी० (1987): "जनसंख्या भूगोल", कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. तिवारी, आर०सी० (1958): अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. वर्मा, रामविलास (1978): "भारत का संक्षिप्त भौगोलिक विवेचन", किताबधर, आचार्य नगर, कानपुर।
8. सिंह रामबली, (1988), 'समन्वित क्षेत्रीय विकास एवं भूगोल' भू-विकास अंक-3 भाग 2,
9. Barlowe, R. and Johnson, V.W. (1954), "Land Problems and Policies", McGraw Hill Book Company, Inc. New York, p.99.
10. Kareiel, H.G. and Kariel, RE. (1972), "Explanations 11 Social Geography", Addison-Wesley Publishing Company, p. 172.
11. Singh, BB. (1979), "Krishi Bhoogol", Tara Publications, Varanasi, p.105.

\*\*\*\*\*